महाशिवरात्रि शिव-संकल्प

14.02.99-कम्पिल

(प्राइमरी नॉलेज पर आधारित)

शिव माना कल्याणकारी। तो देख लें हम अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति, अपने देश और विश्व के प्रति कितने कल्याणकारी बने हैं? शुभ संकल्प माना पॉजिटिव संकल्प, श्रेष्ठ संकल्प, अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी कल्याणकारी संकल्प। आत्मा के जितने-2 पाप भस्म होंगे उतना वह शुद्ध संकल्प करने वाली बनेगी। क्यों? क्योंकि आज सारी दुनिया अशांत हो रही है। मन अशांत है तो तन भी अशांत हो जाता है। मन के संकल्प बीज हैं; इसलिए कहा गया है कि ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची गई। सिर्फ़ ब्रह्मा के संकल्प से ही नहीं, हम सब ब्रह्मा की औलाद हैं, सारी सृष्टि ब्रह्मा की औलाद है, तो हम अपने लिए भी जन्म-जन्मांतर के लिए शुभ वा अशुभ संकल्पों से अपनी सृष्टि रचते हैं। यह अभी संकल्पों का खेल है। सिर्फ़ टाइटिल धारण करना कि हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं माना ब्राह्मण और ब्राह्मणी हैं, हम ब्रह्मा की आदि संतान हैं, जनरेशन हमारे से शुरू हो रही है; लेकिन अन्दर से संकल्पों में कालिख निकलती रहती है, संकल्पों का प्रदूषण फैलता रहता है, तो वह पक्का ब्राह्मण नहीं है। वह अपना भी अनिष्ट करता है, अपने परिवार का भी अनिष्ट करता है, साथ ही देश और विश्व का भी अनिष्ट करता है। बाबा ने कहा है कि मधुबन के वायब्रेशन्स सारी दुनिया में फैलते हैं। इसलिए अभी हम मधुबनवासी ब्राह्मण बच्चों के ऊपर संकल्पों को कंट्रोल करने की बहुत जिम्मेवारी है। कोई भल कैसा भी पार्ट बजा रहा है; लेकिन हमारे अन्दर यह भावना हो कि यह आत्मा जो पार्ट बजा रही है, यह अपने 63 जन्मों की रील घुमा रही है। "बनी-बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाय।" यह 63 जन्मों का, गिरती कला के जन्मों का जो पाप और पुण्य का लेप-छेप हर आत्मा के अंदर समाया हुआ है, वही इस समय संगमयुग में रील चलती है और जो रील चलती है उस रील में सब नूँध होता जाता है। अच्छा भी नूँध हो रहा है, बुरा भी नूँध हो रहा है। हर आत्मा अपने-2 संस्कारों से बँधी हुई है। हाँ, बुद्धि में ज्ञान मिला हुआ है तो ईश्वरीय ज्ञान से वह अपने संस्कारों को काट सकती है, समझ सकती है- ये दैवी संस्कार हैं, ये आसुरी संस्कार हैं; ये दैवी संकल्प हैं, ये आसुरी संकल्प हैं। 63 जन्मों का जो लेप-छेप लगा हुआ है, एक-दूसरे के साथ जो हिसाब-किताब बँधा हुआ है, वह अभी इस अंतिम जन्म में पूरा हो रहा है। बिना किसी हिसाब-किताब के कोई आत्मा संबंध-सम्पर्क में आती नहीं है। सारी सृष्टि पर हम सभी ब्राह्मणों का यह अंतिम जन्म है। ब्राह्मणों का ही नहीं, सारी सृष्टि का यह अंतिम जन्म है।

आज से 5000 वर्ष पहले भी भगवान ने आकर अर्जुन को निमित्त बनाकर कहा था- "हे अर्जुन! ये सब मेरी दाढ़ों के बीच चबाए जाने वाले हैं।" मुँह खोलकर दिखा दिया। यह सारी सृष्टि इन दाढ़ों के बीच में आई हुई पड़ी है। वे दाढ़ें कोई दूसरी नहीं हैं। जो आसमान में और जमीन के अंदर, समुद्र के अंदर, सुरंगों में ढेर ऐटम बम भरे पड़े हैं, वही भगवान की दाढ़े हैं। आज से 60(75) वर्ष पहले इस घातक चीज़ का नामनिशान नहीं था। 60(75) वर्ष पहले ढेर के ढेर भगवान इस सृष्टि पर नहीं थे, खास करके भारतवर्ष में। 60(75) वर्ष पहले असली भगवान भी नहीं आया हुआ था; क्योंकि सच्चा भगवान जब सृष्टि पर आता है, सच्चा हीरा जब आता है, तो डुप्लिकेट हीरे भी बनते हैं। अब ये डुप्लिकेट हीरे सब शान्त हो जाएँगे। असली हीरा अब सारी सृष्टि में चमकने वाला है। जैसे बड़े-2 ज्योतिषियों ने बताया हुआ है कि "पूर्वीय देशों में कोई एक ऐसा देश है जहाँ पवित्रता को विशेष मान दिया जाता है। वहाँ से वह शक्ति उदय हो चुकी है और वह बीज से सुधार करेगी।" बीज है ही "मन"। कहते हैं- "मन के हारे हार और मन के जीते जीत।" मन को अगर कंट्रोल कर लिया, मन को अगर एकाग्र कर लिया तो यह जो विजय वर्ष बताया है, वह सार्थक हो जाएगा। विजय वर्ष का मतलब ही है "संघर्ष करना और विजय पाना"; लेकिन किनकी विजय होगी? जिन्होंने एकाग्रता के आधार पर अपना ऐसा अभ्यास बना लिया है। कैसा अभ्यास ? कि पॉजिटिव संकल्प ही चलाने हैं, निगेटिव संकल्प न अपने लिए, न दूसरों के लिए चलाने हैं। एकाग्रता का अभ्यास होगा तब ही ऐसा सम्भव हो सकता है। उसके लिए पहली सीढ़ी बता दी- आत्मिक स्थिति। "मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हूँ। मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ।" मस्तक पर बिंदी या टीका लगाने की ज़रूरत नहीं है; लेकिन उस स्थिति में टिकने की ज़रूरत है। टीका या बिंदी आत्मिक स्मृति में टिकने की निशानी है; इसलिए गीता में लिखा हुआ है- मनुष्य जब शरीर छोड़े तब "भ्रूवोर्मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्" (गीता 8/10) अर्थात् भृकुटि के

मध्य में अपनी आत्मा को भली-भाँति एकाग्र करे। अपने को एकाग्र करने की यह पहली सीढ़ी है, जिसके लिए अर्जुन को बताया। अर्जुन ने पूछा, मन बहुत चंचल है, तो भगवान ने कहा- "अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते" (गीता 6/35) अर्थात् मन को भली-भाँति एकाग्र करने का अभ्यास करें और इस पुरानी दुनिया से बार-2 वैराग भाव उत्पन्न करें। वैराग लाने के लिए यह बुद्धि में आना ज़रूरी है कि इस दुनिया का शीघ्र ही विनाश होने वाला है। इसके लिए भरपूर सामग्री तैयार हो चुकी है।

कलियुगी, पापाचारी दुनिया जब नष्ट होने वाली होती है, तभी भगवान का आना साबित होता है। रामराज्य में भगवान को आने की क्या दरकार? फिर दिखाया है, राम के साथ रावण भी था; लेकिन वे सब बातें कहाँ की हैं? ये सब भूल चुके। वास्तव में कलियुग के अन्त में इस सृष्टि पर तब भगवान अवतरित होता है जबकि सारी सृष्टि पतित हो जाती है। तब इन चार युगों की शूटिंग होती है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर यह जो इतना बड़ा ड्रामा है, जिसमें हम पार्ट बजा रहे हैं, यह चार सीन्स का ड्रामा है- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। इस अंतिम युग में, अंतिम जन्म में भगवान इस सृष्टि पर आकर सृष्टि को पलटता है, पापी कलियुग से पुण्यात्मा, देवताओं की सतयुगी दुनिया बनाता है। इस समय चारों युगों की शूटिंग होती है। शूटिंग का सारा हिसाब-किताब शास्त्रों में लिख दिया है- "संभावामि युगे-युगे", मैं हर युग में आता हूँ माना शूटिंग पीरियड में भी वह परमपिता परमात्मा ब्राह्मणों के बीच में चार बार प्रत्यक्ष होता है - सतयुगी शूटिंग के अन्त में, त्रेतायुगी शूटिंग के अन्त में, द्वापरयुगी शूटिंग के अन्त में और कलियुगी शूटिंग के अन्त में। उस हिसाब से अभी(सन् 99 में) द्वापरयुगी शूटिंग का अन्त हुआ है। अभी सम्पूर्ण प्रत्यक्षता सारे संसार के सामने होनी बाक़ी है। इंटरनेट, टी.वी., रेडियो व अख़बारों के द्वारा प्रत्यक्षता होगी। सारा संसार जब तक उस सुप्रीम सोल बाप को पहचानता नहीं है, जानता नहीं है, तब तक इस सृष्टि का टोटल विनाश नहीं हो सकता। इसीलिए शास्त्रों में कहा है कि सब एक में समा गए माना परमपिता परमात्मा का जो संकल्प है, परमपिता परमात्मा के अंदर इस सृष्टि का जो ज्ञान है और ज्ञान का सार ज्योतिर्बिन्दु है, वह हर मनुष्य मात्र के अंदर समा जाएगा। कोई के भी संकल्प उस परमपिता परमात्मा बाप के विरोध में नहीं चलेंगे। चाहे कोई कितनी भी नास्तिक से नास्तिक आत्मा क्यों न हो, वह भी इस सृष्टि पर पलटने वाली है। जो अहंकार में भरे हुए रशियन्स हैं या क्रोधी क्रिश्चियन्स हैं, जिन्होंने ढेर ऐटम बम बना रखे हैं, दुनिया को डरा रहे हैं कि हम विध्वंस कर देंगे, हम यह कर देंगे, हम वो कर देंगे, वे भी होपलेस हो जाएँगे। अंत में वे आत्माएँ भी कहेंगी ''ओ गॉड फादर! रहम करो" और वे नतमस्तक हो जाएँगे, झुक जाएँगे। इसलिए हमारे यहाँ यह परम्परा चल रही है, जब सभा समापन होती है या कोई यज्ञ कार्य सम्पन्न होता है या आरती वगैरह पूरी होती है या कोई अनुष्ठान पूरा होता है तो क्या कहते हैं? विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो, अधर्म का नाश हो, सत् धर्म की स्थापना हो। ये शुभसंकल्प हर प्राणी मात्र के अंदर से प्रैक्टिकल अनुभूति में निकलेंगे। तब इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो आखिरी सीन है वह सम्पन्न हो जाएगा और आखिरी सीन जब सम्पन्न होता है तो त्रिमूर्ति में से, तीन देवताओं में से जो सबसे ऊँचा देवता महादेव माना जाता है, जैसे यज्ञ कार्य होता है तो यज्ञ कार्य में अंतिम आहुति किसकी मानी जाती है? कौन-से देवता की मानी जाती है? शंकर की। तो वह अंतिम आहुति जब होती है तब वह बात प्रत्यक्ष हो जाती है, हर-हर, बम-बम महादेव। ये जो ढेर एटमिक बम बने हुए हैं, इनसे सारा कार्य समापन हो जाएगा। ये बम्स भी कल्याणकारी हैं; क्योंकि सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता है। अभी परमपिता परमात्मा प्यार से पढ़ाई पढ़ा रहा है, बता रहा है कि बच्चे, अब श्रेष्ठ संकल्प करो। संकल्प रूपी बीज जब श्रेष्ठ बोया जाएगा तो वाचा भी सुधरेगी। कम बोलो-धीरे बोलो-मीठा बोलो। वाचा भी दृष्टि, वृत्ति, मन के संकल्पों के आधार पर सुधरेगी। वाचा में सुधार आएगा तो कर्मों में भी सुधार आएगा। फिर कर्मेन्द्रियों से जो भी कर्म कर रहे हैं वे दुःख देने वाले कर्म नहीं हो सकते, सुख देने वाले ही कर्म होंगे। तो हर तरीके से सुधार होता है; लेकिन उसका बीज क्या है? संकल्प। यह सत् संकल्प, शुभ संकल्प या शिव संकल्प। भगवान संगमयुग में आकर हमको यह दात देते हैं कि अभी हमें बीज को सुधार लेना है। पत्तों-2 को पानी देने से कुछ भी नहीं हुआ है। कितने हॉस्पिटल खोलते चले जा रहे हैं, कितनी दवाइयाँ बनती चली जा रही हैं। ज्यों-2 दवा की, मर्ज बढ़ता गया अर्थात् फायदा तो नहीं हो रहा है। कितने धर्म बढ़ गए, कितने धर्मों की अलग-

2 प्रकार की धारणाएँ बढ़ गईं, अलग-2 प्रकार के उपदेश बन गए; लेकिन दुनिया में सौहार्द, प्रेम, स्नेह घटता जा रहा है। परमपिता आकर सब जातियों को मिला करके एक जाति बनाता है, सब धर्मों को मिला करके एक सत् धर्म की स्थापना करता है, सब देशों को मिला करके एक ऐसा देश तैयार करता है जो सारे विश्व का प्रतिनिधित्व करे, सब भाषाओं को एक भाषा में मर्ज करा देता है। इसका सैम्पल ज़रूर इस सृष्टि पर कहीं-न-कहीं अभी देखा जाना चाहिए। अगर ज्योतिषियों की वह वाणी सच्ची साबित होनी है तो प्रैक्टिकल में यह बात देखी जानी चाहिए।

देश-विदेश की सरकारें तो बहुत ही प्रयत्न कर रही हैं कि जनसंख्या न बढ़े, परिवार नियोजन हो जाए। तो आर्टिफिशियल दवाइयों, कृत्रिम साधनों, ऑपरेशन वगैरह- इनके द्वारा अपने-2 प्रयत्न कर रही हैं; लेकिन परमपिता आकर एक ही प्रयत्न ऐसा बताता है जो गीता का सबसे श्रेष्ठ ज्ञान गृहस्थियों के लिए है- अर्जुन! ये काम और क्रोध तेरे महाशत्रु हैं। तू उनको त्याग। दुर्योधन, दुःशासन ये तेरे महाशत्रु हैं- यह नहीं कहा, क्या कहा? काम और क्रोध ये महाशत्रु हैं। घर-गृहस्थ में रहकर नर अर्जुन और नारी द्रौपदी कैसे काम विकार के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हैं वह परमपिता आकर सिखा रहे हैं। अभी दुनिया को उस बात पर भले विश्वास हो या न हो; लेकिन परमपिता इस सृष्टि पर आकर ऐसा परिवार तैयार कर रहा है जो परिवार सारे विश्व में इस बात को सार्थक कर देगा, जो हमारा भारतीय नारा है, "वसुधैव कुटुम्बकम्" । चाहे किसी भी धर्म का हो, जाति या किसी भी सूबे या देश का हो, चाहे किसी भी भाषा का हो, वे सब मिल करके एक परिवार में समा जाने वाले हैं।

जो ऐटमिक विभीषिका है और उसके आधार पर जो प्राकृतिक प्रकोप होने वाले हैं, उनसे भी ऐटम बम्स फटेंगे तो पृथ्वी डोलायमान होगी। भूकंप आएगा तो दुनिया की जितनी भी बड़ी-ते-बड़ी, ज़्यादा-से-ज़्यादा जनरेशन है जो कि बड़ी-2 बिल्डिंगों में रही पड़ी है, वह सब नष्ट हो जाएगी। परमात्मा बाप के उस परिवार के जो भाँति बनेंगे, जिनका हमारे शास्त्रों में गायन है, भारतीय परम्परा में 9 लाख सितारे, आसमान के जड़ सितारे नहीं, ये भृकुटि के मध्य में रहने वाले चैतन्य सितारे परमात्मा के गले का हार बन करके रहेंगे। वह परमात्मा का परिवार है। यह परमात्म-परिवार अब तैयार हो रहा है।

यह शिवरात्रि बहुत श्रेष्ठ शिवरात्रि है। रात्रि क्यों कहा जाता है? शिवरात्रि क्यों कहा जाता है? सिर्फ़ रात्रि नहीं कहते, क्या कहते? महाशिवरात्रि और मनाई भी कब जाती है? माघ मास के महीने में और कौन-सी तिथि? अमावस्या से एक/दो दिन पहले। इसका अर्थ क्या हुआ? वह स्थूल अंधकार की बात नहीं है। कौन-से अंधकार की बात है? जैसे टी.वी. में शक्तिमान सीरियल आता है, उसमें असुर क्या बोलते हैं? अंधेरा कायम रहेगा। जो आध्यात्मिकवाद के दुश्मन हैं वे सत्यता को प्रत्यक्ष नहीं होने देना चाहते। भारत देश ही एक ऐसा देश है जिसकी जान आध्यात्मकवाद के अंदर समाई हुई है। अगर हम आध्यात्म में जिएँगे, अपने जीवन का यह लक्ष्य रखेंगे तो भारत का उत्थान हो सकता है। बाक़ी दुनिया की कोई ताकत नहीं जो भारत का उत्थान कर सके।

अधि+आत्मा- आत्मा के अंदर क्या है- यह जाने। परमपिता शिव भी आत्मा ही है। आत्मा के अंदर क्या है यह जानने के लिए लालसा पैदा होगी और परमपिता शिव के अंदर क्या है वह भी जानने की लालसा पैदा होगी। आत्मा और परमात्मा का अगर पूरा ज्ञान हो और हर दृष्टिकोण से वह सत्य साबित होता है तो खुशी की लहर हर मनुष्य आत्मा के अंदर दौड़ेगी। परिस्थितियाँ भल कैसी भी आएँ; लेकिन एकाग्रता की शक्ति से हर आत्मा अपने को खुशी में सेट कर सकती है। उसको कहते हैं, जीवनमुक्ति का वर्सा। जीवन रहे; लेकिन दुःख अनुभव न हो, ज्ञान की ऐसी पराकाष्ठा हो जाए। जीवन रहे; लेकिन दूसरों को सुख देने का प्रयत्न करे, दुःख देने का प्रयत्न न करे। यह बात बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है कि दुःख देना नहीं है; लेकिन जो मुख्य बात है वह भूल जाती है कि हम किसलिए दुःखी होते हैं? भारतवर्ष में जो गीता का उपदेश बहुत पुराना चला आ रहा है- "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।" (गीता 12/15) अर्थात् वही सम्पन्न मनुष्य है जिससे दूसरे मनुष्य उद्वेग को प्राप्त न हों और वह दूसरों से उद्वेगित न हो। दूसरा कोई भले दुःख देने की कोशिश करे; लेकिन वह दुःखी न हो। ऐसा ही हर आत्मा को अपने को बनाना है और जो बनाने वाला है, सहयोग देने वाला है, आगे बढ़ाने वाला है, वह हमारा गुरु है; गुरु ही नहीं, सद्गुरू है;

क्योंकि दुनिया में गुरु तो बहुत ही हुए और जितने भी गुरु हुए, वे सब मनुष्य गुरु हुए हैं। मनुष्य गुरुओं से तो दुनिया नीचे गिरती गई। आज दुनिया का यह हाल हो गया कि एक परिवार के भाँति भी आपस में प्यार और स्नेह के आधार पर नहीं चल सकते। अब सद्गुरू की आवश्यकता है और वह सद्गुरू इस सृष्टि पर आकर सब गुरुओं का भी कल्याण करता है; इसलिए गीता में लिखा है, "परित्राणाय साधूनाम्।" (गीता 4/8) किसलिए आता है? जो भी साधू, संत, महान पुरुष हैं, जो भी गुरु हैं, उन सबकी रक्षा करने के लिए आता है। वह अभी इस सृष्टि पर आ चुका है।

तो हम सच्ची-2 शिवरात्रि मनाएँ और संकल्प लें कि कोई भी हालत में हम किसी भी प्रकार के दुष्ट संकल्प अपने मन में नहीं आने देंगे, चाहे जैसी भी परीक्षा आए। इस बात में जितना हम ईश्वर के कार्य में सहयोगी बनेंगे उतना हम सच्ची-2 शिवरात्रि मनाएँगे। जितने परसेंटेज में निगेटिव संकल्प करेंगे उतने परसेंटेज में मात खाएँगे। रात्रि माना अंधकार, अज्ञान का अंधकार, जो आज सृष्टि पर फैला हुआ है। जिस चीज़ के लिए जानने की ज़रूरत है, दुनिया नहीं जानना चाहती। हर मनुष्य के पास जन्म से ही अपने परिवार के अंदर से जो प्राप्ति होती है- तनबल, धनबल, जनबल और मनोबल, कुछ-न-कुछ मिलता ज़रूर है; लेकिन बड़े होकर जितना-2 बौद्धिक विकास होता जाता है, अपनी सारी शक्ति धन इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं, तनबल इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं या जनबल इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं; लेकिन ये तीनों चीज़ें गौण हैं। इनका इतना महत्व नहीं है, जितना मनोबल का महत्व है। मन की शक्ति सुबह से लेकर शाम तक और रात को सोते हुए स्वप्न में भी लगातार बिखरती रहती है। कभी मन इधर जाता है, कभी उधर जाता है। मन है बीज। इस तरह जन्म-जन्मांतर आत्मा रूपी चैतन्य बीज की शक्ति क्षीण होती गई। यहाँ तक कि शरीर भी कमज़ोर होते गए। मन रूपी आत्मा का बीज बार-2 जन्म लेने से कमज़ोर होता गया, जिसके कारण शरीर रूपी वृक्ष भी कमज़ोर होते गए। आज से 400 साल पहले की महाराणा प्रताप की जो तलवार म्यूज़ियम में रखी है वह तलवार आज कोई सामान्य व्यक्ति चला भी नहीं सकता। जब उनकी तलवार ही इतनी भारी थी, तो मनुष्य कितने शक्तिशाली होंगे ! उनकी लंबाई भी आजकल के मनुष्यों से ऊँची थी। विल पावर की कमी होने के कारण आज के मनुष्य की औसत आयु 30 साल रह गई है, हर आँख पर चश्मा लग गया है। जन्म-जन्मांतर सुख भोगते-2 आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाने के कारण उसमें शक्ति भरने के लिए परमपिता इस सृष्टि पर आता है और बताता है कि बच्चे, अब पत्तों-2 को पानी देना बंद कर दो। एकाग्रता की शक्ति बढ़ाओ। मैं भी शिव ज्योतिर्बिन्दु का बच्चा सितारा आत्मा हूँ, जिस ज्योतिर्बिन्दु सितारा का यादगार शिवलिंग मंदिरों में बनाते हैं, जिसे ज्योतिर्लिंगम् कहा जाता है। वह शिवलिंग का पत्थर ऐसे शरीर रूपी लिंग की यादगार है जो अपनी कर्मेंद्रियों को भूला हुआ रहता है, जिसका हमारे भारतीय परम्परा में नाम दिया है-"शंकर" । उसको महादेव कहा जाता है। उसका टाइटिल है-"विश्वनाथ"। वह योगबल के आधार पर सारे विश्व के ऊपर कंट्रोल करने वाला है। उसमें परमपिता शिव की सोल (सुप्रीम सोल) समाकर कार्य करती है; लेकिन लोग नहीं जानते कि शिव की आत्मा अलग है, जो जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आती है, गर्भ से जन्म नहीं लेती है, जबकि राम (शंकर) की आत्मा जन्म-मरण के चक्र में आती है। शंकरलिंग नहीं कहा जाता है, शिवलिंग कहा जाता है। शंकररात्रि नहीं कही जाती है। क्या कही जाती है? महाशिवरात्रि। शंकर हमेशा ध्यानमग्न अवस्था में दिखाया गया है। अब यह ध्यानमग्न बैठा हुआ जो व्यक्ति दिखाया गया है वह किसको याद कर रहा है? अपने से ऊँचे की याद कर रहा है या अपनी याद में बैठा हुआ है? ज़रूर उससे भी कोई ऊँचा है, जो हम श्लोकों में गाते रहे- "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।" उनके भी ऊपर "गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।" माना ब्रह्मा गुरु है, विष्णु गुरु है और महेश्वर (शंकर) गुरु है; लेकिन इन तीन देवताओं में से भी बड़ा कौन? परब्रह्म। उससे बड़ा कोई नहीं; लेकिन वह बड़ा किस आधार पर? वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता, वह सिर्फ़ प्रवेश करता है, जो गीता में अक्षर आया हुआ है,"प्रवेष्टुम्" (गीता 11/54) अर्थात् मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। वह गर्भ से जन्म नहीं लेता। अगर वह भी गर्भ से जन्म लेने लगे, जन्म-मरण के चक्र में आने लगे तो हम आत्माओं को छुड़ाने वाला इस सृष्टि पर कोई नहीं है। वह "परात्पर" परे-ते-परे रहने वाला परब्रह्म इस सृष्टि पर अब फिर से आया हुआ है।

चाहे ब्रह्मा, चाहे विष्णु, चाहे शंकर, चाहे उन्हें राम कहें, चाहे उन्हें कृष्ण कहें; क्योंकि सृष्टि रूपी रंगमंच के वे रामकृष्ण ही विशेष हीरो-हीरोइन हैं। अंग्रेजों में उनको एडम और ईव कहा जाता है। मुसलमानों में उनको आदम और हव्वा कहा जाता है। जैनियों में उनको आदिनाथ और आदिनाथिनी कहा जाता है। वे सृष्टि के आदि हैं। उनको नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनाने के लिए परमपिता शिव को आना पड़ता है। वह उस महान समय पर आता है जबकि सारी सृष्टि अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई होती है। अभी वह फिर से आया हुआ है। सारी दुनिया अपने-2 प्लैन बनाकर दौड़म-दौड़ कर रही है। किसी को पता ही नहीं है कि क्या होने वाला है। कौन-सा जमाना आने वाला है और कैसा सीन हम सबके सामने, सारी दुनिया के सामने आने वाला है, किसी को कुछ पता नहीं। सब अपनी-2 दौड़ में लगे हुए हैं, अपनी-2 प्लानिंग में लगे हुए हैं। सच्चाई जब प्रत्यक्ष होगी तब अंत में कहेंगे- "राम नाम सत्य है।" वह राम जिसको दो हिस्सों में कहा जाता- एक निराकार और एक साकार। निराकार माना शिव सुप्रीम सोल और साकार माना इस सृष्टि का जो विशेष हीरो पार्टधारी आत्मा, 500/600 करोड़ मनुष्य-आत्माओं में से जो हीरो पार्ट बजाने वाली आत्मा है, उस हीरो पार्टधारी के द्वारा परमपिता शिव इस संगमयुग में शंकर के रूप में महेश्वर का पार्ट बजाता है; इसलिए अपनी भारतीय परम्परा में कहते हैं- "औरों एक गुपुत मत सबै कहौ कर जोरि। शंकर भजन बिना नर भगति कि पावै मोरा।" अर्थात् और भी एक गुप्त विचार है कि शिव की भक्ति के बिना कोई मेरी भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। ये जीव-आत्माएँ अलग-2 पात्र नहीं हैं। जो सतयुग के आदि में नारायण था"हे कृष्ण नारायण वासुदेव" वही कलियुग के अंत में आकर ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाता है। अब यह त्रेता का राम कहाँ गया? वही कलियुग के अंत में, संगमयुग में आकर शंकर के रूप में पार्ट बजाता है। ये सृष्टि रूपी रंगमंच की शाश्वत शक्तियाँ हैं, जिनके द्वारा यह सारा खेल रचाया जाता है। रचाने वाला वह डाइरैक्टर इन आँखों से देखने की चीज़ नहीं है कि चलो भाई, दर्शन करें। उसके लिए शिव का तीसरा नेत्र कहा जाता है। उस नेत्र को क्या कहते हैं? शिवनेत्र। ऐसे नहीं कि वह शिवनेत्र सिर्फ़ शंकर जी को ही था। हम सबको यह तीसरा नेत्र उघाड़ना पड़ेगा। वह शिवनेत्र (तीसरा नेत्र) अगर हमारा खुलेगा तब ही उस सुप्रीम सोल को सच्चाई से पहचान सकेंगे, वरना इन आँखों से परमपिता शिव देखने की चीज़ नहीं है। आज देखेंगे, दूसरे बता देंगे कि यह है भगवान, वह रहा भगवान और कल माया ऐसी सवार हो जाएगी, कौन भगवान? ऐसा भगवान होता है? "कै समझे कवि कै समझे रवि।" कवि तो कविताएँ रचकर चले जाते हैं, उसका अर्थ बताने वाला कोई नहीं रहता। बाप आकर गीता का अर्थ बताते हैं माना मुरलियों का अर्थ बताते हैं; इसलिए गीता में कहा गया है, "गुह्यात् गुह्यतरं ज्ञानम्", (गीता 18/63) गुह्य ते गुह्य राज़ समझाता हूँ। उसके लिए अपनी बुद्धि को एकाग्र करना पड़े। कलियुग में हर कोई स्थूल धन कमाने में लगा हुआ है। सब चाहते हैं हम आराम से रहें। कोई भी काम नहीं करना चाहता। सरकारी ऑफ़िसर भी काम नहीं करना चाहते। सब चाहते हैं कि क्लब में जाएँ, नाचें, गाएँ, आराम से रहें। विद्यार्थी भी पढ़ना नहीं चाहते हैं। सतयुग में तो कोई मेहनत नहीं होगी। वहाँ प्रकृति ही सब काम करेगी। वहाँ खूब चित्रकारी करेंगे, गीत गाएँगे, अच्छे-2 वाद्ययंत्र होंगे, नाटक करेंगे। वहाँ शिव नहीं होगा, हर आत्मा शिवस्वरूप बन जाएगी। समझने की बात है, जैसे धन कमाने में हम इतना टाइम लगा रहे हैं, परिवार के सारे भाँति 24 घण्टे लगे पड़े हैं, तो एक घण्टे का टाइम कम-से-कम हर एक गृहस्थी आत्मा को इस आत्मा और परमात्मा की गहराई को समझने के लिए भी निकालना चाहिए। ज़्यादा नहीं निकाल सकते, 1 घण्टा तो निकाल सकते हैं। अगर एक घण्टा भी सच्चाई से निकालें तो भी यह गारंटी है कि परमात्मा के गले का हार, जो 9 लाख का हार गाया हुआ है, उन 9 लाख सितारों की गिनती में ज़रूर आ जाएँगे। मेहनत बहुत थोड़ी-सी है और अनेक जन्मों की प्राप्ति है। जन्म-जन्मांतर हमने भक्ति की है और भक्ति जब पूरी होती है तो भक्ति का फल देने के लिए भगवान स्वयं इस सृष्टि पर आ जाता है। माउण्ट आबू में पहले 7 दिन का कोर्स होता था। यहाँ भी 7 दिन की भट्ठी होती है। उसकी यादगार भक्तिमार्ग में है- वह भागवत सप्ताह या रामायण 7 दिन के लिए रखते हैं। जिसकी-2 भक्ति पूरी होती जाती है उसी के अंदर यह श्रद्धा-विश्वास पैदा होता जाता है कि भगवान हमको मिल गया; लेकिन अंधश्रद्धापूर्वक नहीं होना चाहिए कि किसी दूसरे ने अंगुली उठाकर कह दिया कि वह भगवान है और हमने मान

लिया। उसको ज्ञान की दृष्टि से समझो। एक-2 बात को समझते जाएँ और उस पर सही का निशान लगाते जाएँ। अगर समझानी समझ में नहीं आती है तो उसे पूछें क्रॉस क्वेश्चन करें । ईश्वर का ज्ञान कोई अंधश्रद्धा नहीं सिखाता कि सिखा दे, बोल दे कि रावण को दस सिर थे- हाँ, सत् वचन महाराज। कुम्भकरण था, 6 महीने सोता था- सत् वचन महाराज। नहीं। कोई विष्णु था, चार भुजाओं वाला था- सत् वचन महाराज। अरे पूछो तो! चार भुजाओं वाला कोई व्यक्ति था तो आज भी उसके कुल में 4 भुजाओं वाला कोई मनुष्य होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? सबसे बड़ी दात हमको जन्म से मिली हुई है। परमपिता की दात है- मन-बुद्धि। हर मनुष्य आत्मा को जन्म से ही अपने-2 तरीके की मन-बुद्धि मिली हुई है। और चीज़ें बाद में मिली हैं; लेकिन परमपिता की दात मन-बुद्धि है और उसकी हमें कदर करनी चाहिए। अपनी मन-बुद्धि रूपी तराजू पर हर बात को तौलते जाइए कि यह राइट है या राँग है? फिर उसे मानें। जब तक बात बुद्धि में नहीं बैठती है तब तक मत मानो, कोई कुछ भी कहता रहे। तो इस तरह एक-2 बात को समझ करके, जान करके, श्रद्धा और विश्वासपूर्वक आगे बढ़ें; अंधश्रद्धा, अंधविश्वास पूर्वक नहीं। श्रद्धा-विश्वास अलग चीज़ है और अंधश्रद्धा-अंधविश्वास अलग चीज़ है। अगर हम श्रद्धा-विश्वासपूर्वक समझ कर चलेंगे तो हमारा तीसरा नेत्र ज़रूर खुलेगा।

वे जगतपिता हैं। "जगतः पितरौ वंदे, पार्वती परमेश्वरौ॥", शंकर-पार्वती हर धर्म के माता-पिता हैं। हमारे माता-पिता का तीसरा नेत्र होगा तो हम बच्चों का तीसरा नेत्र नहीं होगा क्या? इसलिए देवताओं को भी और देवियों को भी तीसरा नेत्र दिखाया गया है। तीसरा नेत्र कोई स्थूल रूप में नहीं होता है। कौन-सा होता है ? ज्ञान का नेत्र। तो यह शिवरात्रि ऐसे नहीं कि सारी रात जागरण कर लिया, रात्रि के 12 बजे शिवरात्रि पूरी हो गई। परमपिता जब इस सृष्टि पर आता है तो हर बात का गुह्यार्थ बताता है। वह गुह्यार्थ यह है कि अब सारी सृष्टि पर अज्ञान अंधेरा छाया हुआ है। थोड़ी-सी मुट्ठी भर बीज-रूप आत्माएँ हैं जो गुप्त रहकर अपना कार्य कर रही हैं, सबको जगाने का कार्य कर रही हैं, जिसकी यादगार दीपावली मनाई जाती है- दीपों की अवली, दीपकों की लाइन। एक के बाद एक, 9 लाख दीपक तैयार होंगे। अब सच्ची दीपावली हमको मनानी है। विकारों की होली जलानी है। विकारों से रक्षा का सूत्र बाँधना है। ये जितने भी त्योहार हैं वे इस समय संगमयुग की विशेष यादगार है। उन यादगारों को हम सिर्फ़ मनाएँ नहीं; लेकिन प्रैक्टिकल रूप में सामने लाएँ। अभी तो हमारे लिए रोज़ शिवरात्रि है, रोज़ दीपावली है, रोज़ दशहरा है। कैसे है, अगर इस राज़ को भी जाना तो इस अज्ञान अंधेरे का भी ख़ात्मा हो जाएगा। अभी हमने सच्ची-2 शिवरात्रि नहीं मनाई है। अभी वह टाइम आ गया है। ये आध्यात्मिक कार्य की जड़ें सिर्फ़ भारत तक ही नहीं फैली हुई हैं, सारे विश्व में फैली हुई हैं। यह क्रांति ऐसी क्रांति है जो थोड़े समय के अंदर शुभ और अशुभ संकल्पों का विराट संघर्ष सामने लाएगी। एक-2 मन-बुद्धि रूपी आत्मा के अंदर वह क्रांति होगी। वाचिक क्रांति भी होगी और कर्मणा की क्रांति भी; लेकिन जो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं वे संकल्पों से और वाचा से समग्र विश्व में क्रांति के निमित्त बनेंगी, स्थूल खून बहाने के निमित्त नहीं बनेंगी और जो देह-अभिमानी असुर हैं वे तो स्थूल खूनी क्रांति करेंगे ही। हर कोई नं०वार विश्वपरिवर्तन के निमित्त बनेंगे।

"मननात् मनुष्यः", मनन-चिंतन-मंथन करने से मनुष्य कहा जाता है। अगर मनुष्य मनन-चिंतन-मंथन नहीं करता तो वह मनुष्य काहे का? तो अब मन की एकाग्रता का अभ्यास करिए। हम सच्चे-2 मनुष्य की औलाद बनें। मनु माना ब्रह्मा। असली ब्राह्मण बनने का समय अभी है। ब्रह्मा के आचार-विचार अपने जीवन में प्रैक्टिकल धारण करने से हम अपने पुराने जड़जड़ीभूत दुःखदायी संस्कारों को चेंज कर सकते हैं। अगर अब नहीं किया, तो कब नहीं हो सकता- यह ईश्वरीय लास्ट वॉर्निंग है। अभी थोड़े समय में सारे संसार के अंदर टू लेट का बोर्ड लगेगा, फिर आत्माएँ हाय-2 करेंगी- हमने ईश्वरीय संदेश नहीं लिया अथवा एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया। परमात्मा का गुप्त कार्य चल रहा है, जो महाभारत में प्रसिद्ध है कि पाण्डव गुप्त होकर घूमते थे। पाण्डवों ने सबसे ज़्यादा लम्बा गुप्त वास कहाँ किया? कोई स्थान है ऐसा? फर्रुखाबाद, (उ०प्र०) में कम्पिला नगरी का ही शास्त्रों में गायन है।

लोग पूछते हैं जब इतना श्रेष्ठ ज्ञान है और इतने वर्षों से चल रहा है तो सबको पता क्यों नहीं चलता? अरे, शास्त्रों में जो गायन हैं वे सब झूठे हैं क्या? अपनी भारतीय परम्परा में ज्ञान और योग को प्रदर्शन किया जाता है क्या? नहीं किया जाता है। एकान्त में कहीं जाकर गुफा में बैठकर तपस्या करते थे। अपनी कुटिया में बैठकर तपस्या की और अपनी आत्मा की पावर को जगाया। शास्त्रों में ये सभी बातें इसी संगमयुग की यादगार है। गीता में लिखा हुआ है कि मैं साधारण मनुष्य तन में आता हूँ। साधारण मनुष्य तन में आए हुए मुझ परमपिता को मूढ़मति मनुष्य नहीं पहचान पाते। किसको कहा मूढ़मति? साधारण तन का मतलब ही है गुप्त वेष में आता हूँ। अगर प्रत्यक्ष रूप में आ जाए तो भगवान के विराट रूप की असली प्रत्यक्षता नंबरवार फिचर्स के रूप में सबको नहीं हो सकती। ऐसे मन-बुद्धि से एकान्त वास करके, गुप्त पुरुषार्थ, गुप्त तपस्या करने वाले श्रेष्ठ पुरुषार्थी शास्त्रों में ऋषि-मुनि-तपस्वियों के रूप में अनेक प्रकार से गाए हुए हैं। ऐसे शंकर के जूड़े के ऊपर 8 मणके रखे जाते हैं। ये दुनिया की 8 श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, जो हमारे यहाँ हर अनुष्ठान में अष्ट देवता के रूप में पूजी जाती हैं। वे हैं अष्ट देव आत्माएँ। वे हैं सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ, जो भगवान के सर के ऊपर चढ़कर बैठ जाती हैं; जैसे- गंगा। लोग समझते गंगा तो स्थूल पानी की गंगा होगी; लेकिन चित्र में चित्रकार ने किसी कन्या का मुख दिखाया है, उस पर किसी का ध्यान नहीं। ज़रूर कोई कन्या है जो सबसे जास्ती ज्ञान धारण करती है। उसे शंकर के माथे पर दिखाया गया है। वह है नम्बर वन गंगा, बाक़ी सब हैं नम्बरवार गंगाएँ। इसी तरह 12 राशियाँ भी हैं। वे सिर्फ़ 12 ही क्यों बताते हैं? ज़रूर हर धर्म से चुनी हुई 12-12 आत्माओं के 9 ग्रुप्स श्रेष्ठ आत्माओं के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होते हैं, जिन्हें मिलाकर 108 आत्माओं की वैजयन्ती माला शंकर के गले में दिखाई जाती है। इसी तरह ईश्वर के द्वारा बनाए गए राजसी परिवार के भाँतियों के रूप में 16,108 की माला भी भगवान शंकर के भुजाओं में कंगन के रूप में लपेटी हुई दिखाई जाती है। यह बड़ी माला अभी भी बड़े-2 पुराने मंदिरों में गरारी पर देखी जा सकती हैं। रात को सोते समय- मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ, मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हूँ, मेरा बाप भी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है- इसी स्मृति में सो जाने से ख़राब स्वप्न नहीं आएँगे। सवेरे उठते ही कम-से-कम 10 मिनट तक कोई संकल्प न आए सिवाय आत्मिक स्मृति के। ओमशांति